दिनांक :- 20-05-2020

कॉलेजका नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

इकाई :- सात

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- :- धर्म

जैन संघ में विभाजन :- महावीर के पश्चात गौतम इन्द्र भूमि, सुधर्मन आर्य सुधर्मन ने जैन संघ तथा जम्बूस्वा की परंपरा दिगम्बर तथा श्वेतांबर दोनो सम्प्रदायो में मान्य थी। महावीर की मृत्यु के पश्चात आर्य सुधर्मन ने जैन संघ का नेतृत्व किया। उसके बाद जम्बूस्वामी ने नेतृ अपने हाथ में लिया। जम्बूस्वामी अंतिम केवलिन थी।

Scanned with CamScanner

उसके पश्चात कैवल्य का मार्ग बंद हो गया।

दिगंबर समुदाय :- लगभग 200 ईसा पूर्व में मगध में पड़े भयंकर अकाल की वजह से कुछ भिक्षु आचार्य भद्रबाहु के नेतृत्व में दक्षिण प्रयाण कर गयो कालांतर में उनके शिष्य दिगंबर कहलाये।

श्वेतांबर तथा दिगंबर में निम्नांकित भेद थे :-

श्वेतांबर मोक्ष प्राप्ति के लिये वस्त्रो का त्याग आवश्यक नही समझते थे जबकि दिगंबर वस्त्र त्याग को आवश्यक मानते थे।

श्वेतांबर इसी जीवन में स्त्रियों को निर्वाण का अधिकारी मानते थे जबकि दिगम्बर इसका निषेध करते थे।

श्वेतांबर के अनुसार कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति के बाद भी तीर्थंकरो को भोजन की आवश्यकता रहती है किंतु दिगम्बर के अनुसार आदर्श साधु भोजन ग्रहण नही करते थे।

श्वेतांबर परंपरा के अनुसार महावीर ने यशोदा से विवाह किया था तथा उसे प्रियदर्शना नामक पुत्री भी थी परंतु दिगंबर परंपरा

महावीर को अविवाहित मानता है।
श्वेतांबर परंपरा 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ को स्त्री मानते है जबकि दिगंबर पुरुष मानते है।
श्वेतांबर परंपरा के अनुसार जैनो के 46 आगमो की मान्यता को स्वीकार करते है जबकि दिगंबर उन्हे स्वीकार नही करते तथा कहते है कि पुराने आगम केवल एक खण्ड। खण्डागम के रूप मे बचा है।
श्वेतांबर के उपसंप्रदाय :-
① पुजेरा या मन्दिर मार्गी (डेरावासी) इस संप्रदाय के उपासक मूर्तियो को वस्त्रभूषण मे सजाते थे।
② स्थानकवासी या ढूंढ़िया : स्थानकवासी लोंका संप्रदाय से निकला है। अहमदाबाद के एक व्यापारी लोकशाह संप्रदाय मूर्ति पूजा का निषेध किया तथा लोंका नामक सम्प्रदाय चलाया। उन्ही के एक शिष्य विरजी ने स्थानकासी संप्रदाय चलाया। उनके अनुयायी साधु न तो मूर्ति पूजा करते थे तथा नही मंदिरो मे ठहरते थे

बल्कि स्थानक में निवास करते थे।

③ तेरापंथी – 1760 ई. में एक स्थानकवासी साधु ने तेरापंथी सम्प्रदाय चलाया। यह 13 विशिष्ट बातों को मानता था।

दिगंबर के तीन उपसंप्रदाय —

① बीसपंथी – ये अपने मंदिरों में तीर्थंकरों की मूर्ति के अलावा क्षेत्रपाल, भैरव आदि की मूर्तियाँ भी रखते थे।

② तेरापंथी : इस पंथ के लोग मंदिरों में केवल मूर्तियाँ ही रखते थे

③ तारणपंथी – तेरापंथी का एक उपसंप्रदाय तारन पंथ कहलाता है। 15वीं शताब्दी में तारन स्वामी ने चलाया था। इसके मानने वाले मूर्तियों की पूजा नहीं बल्कि धर्म ग्रंथ को पूजते थे। ये जाति-पाँति में विश्वास नहीं करते हैं। अतः नित्य जाति एवं मुसलमानों को भी इस संप्रदाय का अंग बनाया गया।

④ गुमान पंथ ⑤ तोतापंथ

छोटे पंथ – उपर्युक्त सम्प्रदायों के अतिरिक्त श्वेतांबर तथा दिगंबर अनेक संघों तथा शाखाओं में विभक्त थे। दिगम्बरों

के मूल संघ द्रविड़ संघ, काष्ठ संघ तथा माथुर संघ महत्वपूर्ण थे। इसी प्रकार श्वेताम्बर भी 84 शाखाओं में विभक्त थे।

महावीर के समय अन्य नास्तिक सम्प्रदाय —

अहेतुवाद:- यह मत सांसारिक वस्तुओं की उत्पत्ति का कोई भी कारण स्वीकार नहीं करते हैं।

पुष्पोकतवाद:- इस मत के अनुसार मनुष्य में सुःख तथा दुःख उसके पुनर्जन्म के परिणाम है।

उच्छेवाद :- इसके अनुसार मृत्यु के पश्चात सब कुछ नष्ट हो जाता है।

ईसरकर्णवाद :- यह ईश्वर में विश्वास करता है तथा इसे सृष्टि का कर्ता धर्ता तथा संहर्ता मानता है।

स्वगाविजयवाद: इस मत में मनुष्य को घोर स्वार्थी बनने का उपाय दिया गया है।

जैन साहित्य एवं संगीतियाँ

प्राचीनतम जैन ग्रंथ पूर्व कहे जाते थे। माना जाता है कि इन ग्रंथों की जानकारी केवल भद्रबाहु को थी। जब भद्रबाहु दक्षिण की ओर चले गये तो स्थूलबाहु

के नेतृत्व मे एक सभा आयोजित की गई। इस सभा मे 14 पूर्वो का स्थान 12 अंग ने ले लिया।

14 पूर्वो मे महावीर द्वारा प्रचारित सिद्धान्त संग्रहित है। स्वयं महावीर ने इसे अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा मे अपने शिष्यो तक पहुँचाया।

श्वेतांबर के आगमो मे 12 पूर्व के स्थान पर अंग 12 उपांग 10 प्रकीर्ण (6) छंदसूत्र (4) मूल सूत्र तथा 2 मिश्रित ग्रंथ है।

12 अंग:—

(1) आचरांग सूत (2) सूत्रकृदांग (3) स्नांग

(4) समवायांग। (5) भगवती सूत्र (6) ज्ञान धर्म कथा।

(7) उवासगदसाओ (8) अन्तकृद्दशा (9) अनुत्तरोपपातिक

(10) प्रश्नव्याकरण (11) विपाक सुतम (12) दृष्टिवाद (यह पूरी से उपलब्ध नही है।)

(12) उपांग:—प्रत्येक अंग के साथ एक-एक उपांग संबद्ध है।

(1) औपपातिक (2) प्रज्ञापना (3) चन्द्र प्रज्ञप्ति

(4) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (5) सूर्य प्रज्ञप्ति (6) निरयावली

(7) कल्पावतंसिका (8) राजप्रश्नीक

(9) नीयाभिगम (10) पुष्पिका (11) पुष्पचूलिका
(12) वृष्णिदशा।

(10) प्रकीर्ण :—

① चतुःशरण ② संस्तारक ③ तन्दुलवैचारिक
④ देवेन्द्रस्तव ⑤ वीरस्तव ⑥ महाप्रत्याख्यान

छः छेदसूत्र :- सूत्र रूप में लिखित इन ग्रंथो में जैन भिक्षु-भिक्षुणियो के लिये नियमो का वर्णन है।

① छेदसूत्र ② जि-तकल्पसूत्र ③ बृहतकल्प सूत्र
④ निशीथसूत्र ⑤ महानिशीथसूत्र ⑥ दशाश्रुतस्कन्धसूत्र

चार सूत्र :—

① उत्तराध्ययन सूत्र ② दशवैकालिकसूत्र
③ आवश्यक सूत्र ④ ओकनियति सूत्र

उपरोक्त सभी ग्रंथ सूत्र शैली मे लिखा गया है तथा ये गद्य-पद्य मिश्रित है।

जैन आगमो को सुव्यवस्थित करने के लिये जैन श्रावको ने तीन सम्मेलन बुलाये।

Scanned with CamScanner